ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 58-63
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

तीज–त्योहार और भोजपुरी एवं मैथिली लोकगीत

सुधा त्रिवेदी
अध्यक्षा–हिंदी विभाग, एम.ओ.पी. वैश्णव महिला महाविद्यालय, चेन्नई (तमिलनाडु) भारत

Received- 28 .05. 2019, Revised- 05 .06. 2019, Accepted - 11.06.2019 E-mail: sudha.trivadi26@gmail.com

सारांश : *वैसे तो सम्पूर्ण भारतवर्ष को तीज–त्योहारों और उत्सवों का देश कहा जाता है, परन्तु भोजपुर और मिथिला में तो मानों ये तीज–त्योहार यहाँ के निवासियों की शिराओं में रक्त के साथ घुलकर बहते हैं । त्योहार इनके जीवन की नीरसता में सरसता लाने के सर्वश्रेष्ठ साधन हैं। एक त्योहार के खत्म होते ही दूसरे त्योहार की प्रतीक्षा इनके जीवन में संजीवनी का काम करती हैं। यही कारण है कि 'सतुआनी' (कर्क संक्रान्ति) से 'तिलसंकरांत' तक (मकर संक्रान्ति अथवा तिला संक्रान्ति) तक त्योहार मनाते रहते हैं। सबसे अच्छी बात यह है कि अब तक ये त्योहार शुद्ध उल्लास और उछाह से मनाए जाते रहे हैं। हालांकि इधर कुछ वर्षों से बाजारवाद का राक्षस इस उत्साह को लील लेने को आतुर हो रहा है। परन्तु यह महानगरों में अधिक है। गाँवों की लोक संस्कृति अभी भी त्योहारों को त्योहारों की तरह मनाती है – मेल–मिलाप, गाना–बजाना, पहनना–ओढ़ना, देना–लेना और थोड़े में खुश हो जाना।*

कुंजी शब्द – तीज–त्यौहार, उत्सव, शिरा, नीरसता, सरसता, संजीवनी, सतुआनी, तिसंकरात, उल्लास।

भारत की संस्ति मूलतः वेद आधारित संस्ति है। वेद हमें शिष्टतापूर्वक जीते हुए आनन्दपूर्ण जीवन जीने का संदेश देते हैं। तो भारतीय मूलतः आनन्दराग को जीवनराग बनाने में विश्वास करते आए हैं। जीवन की नीरसता को दूर करके इसे सहज–सरस बना लेने की यही ललक लोक में घुल–मिल गई है। यही कारण है कि भारतवर्ष में इतने तीज–त्योहार मनाए जाते हैं। इसमें भी अगर उत्तरप्रदेश–बिहार को देखें तो पाएंगे कि साल भर तीज–त्योहारों का सिलसिला चलता रहता है।

तिला संक्रान्ति में अभी भी मिथिलांचन हो या भोजपुरी भाषी क्षेत्र – एक महीना पहले से धूम शुरु हो जाती है। धान–सावां–कउनी उबालना–सुखान, भूनना और गुड़ की चाशनी में लपेट–लपेटकर लड्डु बनाना। तिल के लड्डु और गजक तो जरूर बनाए–बाँटे जाएँगे – पाप कटता है। नाते–रिश्तेदारों को नजदीकी के हिसाब से दही–चिउड़ा का भाड़ भेजा जाएगा। संक्रान्ति के दिन जल्दी–से–जलदी नहाने की होड़ होगी, दान की डलिया छुई जाएगी और फिर चूड़ा–दही–चिन्नी–अँचार यौ,
हमरा नीक लागइयै।

ब्राह्मण भोजन, शाम की खिचड़ी बनेगी। ऐसे ही 'सतुआनी' में नवअन्न को भून–पीसकर सत्तू बना लेंगे और गुड़ या नमक से खाएँगे। इसके साथ नए आम के टिकोरे की चटनी आवश्यक है – 'नेवांओन' पड़ता है।

कहने का अर्थ कि कई त्योहार ऐसे हैं जिसमें खर्च बहुत कम करना पड़ता है। श्रम तो है,पर इसका फल मीठा और उत्साहवर्धक है। संक्रांति के बाद वसंत पंचमी, इसके बाद गणेश चौथ फिर होली। होली के बाद नागपंचमी, राखी, कर्मा–धर्मा, तीज, करवा चौथ, दुर्गा–पूजा, दिवाली, छठ, एकादशी, पूर्णिमा – त्योहारों की लंबी श्रृंख्ला है, और साथ ही है इन अवसरों पर गाए जाने वाले मनमोहक गीत। त्योहारों पर कुछ गीत तो देवताओं के होते हैं जो बिल्कुल वैसे ही होते हैं जैसे आराधना स्तुति के लिए, कष्ट–निवारणादि के लिए, शादी–ब्याह या अन्य अवसरों पर गाए जाते हैं। पर कुछ गीत खास तौर से इन अवसरों के लिए होते हैं। जैसे – छठ के गीत केवल छठ के अवसर पर ही गाए जाते हैं। दिवाली के बाद गोधन वाले दिन मिट्टी से नया चूल्हा बनाया जाता है तब ये गीत शुरू होते हैं और कार्तिक शुक्ला सप्तमी को सुबह की अर्ध्य देते ही बन्द हो जाते हैं। यदि लोकगीतों में वर्णित लोकाचार और लोक संस्कृतियों को देखेंगे तो पाएंगे कि कुछ त्योहार मैथिली और भोजपुरी, दोनों ही क्षेत्रों में समान रूप से मनाए जाते हैं। कहीं–कहीं उनका रूप समान रहता है तो कहीं एक ही त्योहार अलग ढंग से मनाया जाता है। इसी तरह हम पाते हैं कि कुछ तीज–त्योहार, जो मैथिली भाषी क्षेत्र में मनाए जाते हैं उनके बारे में भोजपुरी भाषियों को पता भी नहीं है। ठीक उसी प्रकार भोजपुरी भाषियों के कुछ त्योहारों का मिथिलांचल में कुछ पता नहीं है।

जो तीज त्योहार समान रूप से मनाए जाते हैं उनमें प्रमुख हैं –

दुर्गा पूजा – इसमें मिथिलांचल में दुर्गा की मिट्टी की भव्य प्रतिमा बनाकर कलश–स्थापना के उपरांत संकल्प सहित दुर्गा सप्तशती पाठ का चलन है। मगर अधिकांशतया भोजपुरी क्षेत्रों में, विशेषकर उत्तर प्रदेश के भोजपुरी भाषी पूर्वी जिलों में दुर्गा पूजा में दशहरा प्रमुख है। महालया से

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

लेकर नवमी तक हर रात में राम की जीवनी से जुड़े प्रमुख प्रसंगों को नाटक के रूप में खेला जाता है और दशमी को रावण वध होता है। रावण वध किसी बड़ी जगह पर होता है और वहाँ मेला भी लगता है।

मिथिलांचल में दुर्गापूजा में दुर्गा की प्रमुखता है, तो भोजपुरी क्षेत्रों में भगवान श्रीराम की। वैसे मिथिलांचल में भी नवरात्रि में कई लोग रामचरित्रमानस का पाठ करते हैं।

मिथिलांचल में स्त्रियाँ देवी विसर्जन के समय वैसे ही 'समदाउनी' गाती हैं जैसी बेटी बिदाई के समय गाई जाती है और फिर रोती भी हैं। विसर्जन के बाद जिस स्थान पर देवी की प्रतिमा थी, वहाँ दीया जलाकर फिर दो–चार गीत गाती हैं। जबकि पूर्वी उत्तरप्रदेश के भोजपुरी भाषी लोग मेले से आने के बाद सुस्ताते हैं। बाकी अधिकांश बातें समान होती हैं।

छठ – ऐसे ही, छठ जो मूलतः बिहार का पर्व है, वह भी कई भोजपुरी भाषी प्रदेशों में अलग तरीके से मनाया जाता है। वे असली तरीके से मनाए जाने वाले छठ को 'बड़की छठ' कहते हैं और स्वयं बिना 'खरना' का छठ करते हैं जिसे 'छोटकी छठ' कहते हैं। कुछ स्त्रियाँ घर से नहा–धोकर, अच्छे वस्त्र (नए) पहनकर घाट पर जाती हैं और पानी में डुबकी लगाए बिना केवल घुटनों भर जल में खड़ी होती हैं। वे सूपों से सभी अर्घ्य रखने की बजाय केवल एक अर्घ्य आँचल में लेकर खड़ी होती हैं। यह अति सीमित परिवारों में होता है। अन्यथा बाकी दोनों स्थानों पर यह लगभग समान रूप से ही मनाया जाता है। लोकगीत तो लगभग एक ही जैसे होते हैं। चूँकि कार्तिक मास की षष्ठी तिथि को इस व्रत का विधान है, इसीलिए इसे 'छठी'का व्रत कहते हैं। इस दिन सूर्य भगवान की पूजा की जाती है। अतः, वास्तव में इसे 'सूर्यषष्ठीव्रत'कहना चाहिए। गाँवों में इसे 'डालाछठी'के नाम से भी पुकारते हैं। क्योंकि इस दिन पूजा की समस्त सामग्री एक बड़े डाला। बाँस की बनी हुई बड़ी टोकरी में रखकर नदी या किसी तालाब के किनारे ले जाते हैं। इस 'डाला'में रखी गई समस्त वस्तुओं के द्वारा भगवान्सूर्य की पूजा की जाती है। मिथिला में इस व्रत की बड़ी प्रधानता है, जहाँ यह 'छठ'के नाम से प्रसिद्ध है।

एक लोकगीत में कोई स्त्री भगवान्सूर्य से प्रार्थना करती है खड़े खड़े गोड़वा दुखाइल ए अदितमल, डांडवा मोर पिराइल।
हाली हाली ऊग ए अदितमल, अरघ दिआऊ।।

कोई बन्ध्या स्त्री षष्ठी माता से पुत्र की प्राप्ति के लिए प्रार्थना करती हुई कहती है कि –
सासु मारे हुदुका ए दीनानाथ, ननदिया पारे गारी।
बियहुता पुरुखवा ए दीनानाथ, हमरा के डंडा से मारी।।

मिथिला में षष्ठी व्रत बड़े उत्सव तथा उल्लास के साथ मनाया जाता है।इसका विधान विशेषकर स्त्रियाँ राष्ट्रीय व्रत के रूप में करती हैं।मानव प्रकृति सर्वत्र समान है। अतः इन मैथिली गीतों में भी पुत्र की प्राप्ति की कामना का वर्णन पाया जाता है।

षष्ठी के दिन बिना अन्न–जल के दिन भर रहना होता है। चौथे प्रहर स्नान करके नये कपड़े पहने जाते हैं। पूजा के सभी सामान बाँस की नई टोकरी में रखकर व्रतियों का दल गाते हुए धूमधाम से किसी नदी, तालाब या कुएँ के किनारे जाता है, जहाँ वे सँझिया अर्घ्य अथवा सायंकालीन अर्घ्य देती हैं। पूजा की सामग्री में धूप–दीप के अलावा सामयिक फल – नींबू, केला, नारंगी, नारियल आदि होते हैं। स्त्रियाँ इस दिन घर से निकलकर घाट तक गाती हुई जाती हैं –
काँचहिं बाँस के दउरवा, दउरा नइ नइ जाय।
केरवा जे भरल दउरवा, दउरा लचकत जाय।

सप्तमी को प्रातः बेला में सूर्य को अर्घ्य दिया जाता है। गीत गाती हुई स्त्रियों का समूह आधी रात को ही नदी किनारे चल देता है। दीपों की जगमगाहट से नदी के दोनों किनारे आलोकित हो उठते हैं। व्रती स्त्री–पुरुष कमर भर जल में खड़े होकर दो दिन के उपवास से शिथिल शरीर के साथ तीन–चार घण्टे तक सूर्य की उपासना करते रहते हैं। सूर्योदय होने के बाद अर्घ्य देकर व्रत समाप्त हो जाता है। घाट पर दर्शकों की अपार भीड़ होती है। प्रातःकालीन अर्घ्य के बाद लोग माँगकर प्रसाद खाते हैं।

होली – होली तो दोनों ही जगह लगभग समान ही होती है। अगजा, धुलण्डी, रंग, अबीर, गुझिया–पुआ, फाग, फगुआ, झाल–मजीरा–ढोल और गीतों के साथ घुलती अश्लीलता भी। लेकिन संतोष की बात है कि दोनों ही स्थानों में शिष्ट समाज अश्लीलता और फूहड़पन से अपने को दूर रखता है।

मिथिला में फाग या होली का त्योहार बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। होलिकादहन के बाद धुलैंडी के दिन चारों ओर मस्ती भरा वातावरण हो जाता है। मिथिला की होली पर वैष्णव धर्म का प्रभाव दिखाई पड़ता है –
व्रज के बसइया कन्हैया गोआला, रंग भरि मारय पिचकारी
ओइ पार मोहन लहँगा लुटै सखि, एइ पार लूटथि सारी।
जनकपुर के रंगमहल में राम–लक्ष्मण दोनों भाई गुलाबजल से पिचकारी भरकर एक दूसरे को सराबोर कर रहे हैं –
जनकपुर रंगमहल होरी, खेलथि दशरथलाल

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

लय पिचकारी राम लखन दोउ, भरि मुख भारत गुलाल।

मिथिला में होली के गीतों को 'फाग' कहते हैं। इन गीतों की गति, उनकी भाषा का बन्ध और स्वरों का सन्धान अत्यन्त मधुर होता है। मिथिला में गवैयों की टोलियाँ गाँव भर में फिरती हैं। इन लोकगीतों में 'कबीर' एक प्रतीक बन गया है। इनमें श्रृंगार, आनन्द, उछाह के अलावा रतिक्रीड़ा का भी वर्णन रहता है –

गोरी कहँमा गोदउलू गोदना, बहियाँ गोदउली छतिया गोदउली, पिया के पलंग पर रोदना।

वसन्त ऋतु के आगमन के साथ ही वसन्त पंचमी के दिन से ही होली का रंग इस क्षेत्र के लोगों पर चढ़ने लगता है और राह चलते होली के गीत लोगों के कण्ठ से फूट निकलते हैं। राम और कृष्ण उत्तर भारत के महत्वपूर्ण अवतारी पुरुष हैं, जिन्होंने लौकिक जीवन जिया है, इसलिए राम और कृष्ण लोकगीतों में भी छाए हुए हैं। मैथिली और भोजपुरी लोक संस्कृति राम और कृष्ण की संस्कृति से आच्छादित है। फगुआ लोकगीत का जो राम से सम्बन्धित है एक उदाहरण नीचे दिया जा रहा है जिसमें रंग, पिचकारी और अबीर का उल्लेख है। रंग, पिचकारी और अबीर भी भोजपुरी लोकसंस्कृति को अभिव्यक्त करते हैं। जैसे –

होरी खेलैं रघुवीरा अवध में होरी।।
केकरा हाथ कनक पिचकारी, केकरा हाथ अबीरा।
राम के हाथ कनक पिचकारी, सीता के हाथ अबीरा।
होरी खेलैं रघुबीरा अवध में होरी।।

इसी प्रकार राधा और कृष्ण से सम्बन्धित होली गीत भी गाया जाता है। कृष्ण और राधा से सम्बन्धित होलीगीत भी बहुत प्रसिद्ध हैं। ढोलक और मजीरे की ताल पर इसे लोग गाते हैं। गाने वाले वृत्ताकार खड़े रहते हैं और बीच में एक व्यक्ति साड़ी पहन कर नाचता है, इसे 'जोगीड़ा' कहते हैं।

होली पर्व के अवसर पर जो गीत गाये जाते हैं उनमें फगुआ, चौताल, जोगीड़ा, कबीर आदि प्रमुख हैं। कहीं–कहीं होली के गीत बड़े अश्लील होते हैं। जैसे उनको एक सुन्दर मौका मिला हो और वे मन की कसक निकाल रहे हों। यह एक ऐसा अवसर है जब समाज के लोगों की दमित यौन भावना को असामाजिक एवं अश्लील मानते हुए भी उस दिन उसकी अभिव्यक्ति की छूट समाज देता है।

जोगीड़ा गाने वाली मण्डली अपने गाँव में घूम–घूम कर नाचती गाती है और एक दरवाजे से दूसरे दरवाजे जाते समय उस परिवार की मंगल कामना करती है जैसे – सदा आनंदा रहे एहि द्वारे। फागुन के मोहन प्यारे।।

गाँव के लोग अपने दरवाजे पर आयी हुई मण्डली को पुआ, नमकीन, गुझिया मिठाई आदि खिलाकर उनका सत्कार करते हैं। होली के समय अधिकांश लोग भाँग का सेवन करते हैं और शराब के नशे में डूबे रहते हैं।

इस क्षेत्र की यह अपनी संस्कृति है जिसमें नर–नारी–बाल–वृद्ध उन्मुक्त भाव से बिना किसी रोक–टोक के होली के गीत गाते हैं। रंग अबीर खेलते हैं तथा एक दूसरे के गले मिलते हैं। यद्यपि ब्रज की 'लठमार होली' सबसे अधिक प्रसिद्ध है, तथापि भोजपुरी और मैथिली क्षेत्र में होली का त्योहार कम महत्वपूर्ण नहीं है और इस त्योहार के अवसर पर गाये जाने वाली गीतों, लोगों की वेश–भूषा और खान–पान में यहाँ की लोक संस्कृति अपना स्वरूप दिखाती है। इन गीतों में कहीं–कहीं सामयिक विषयों और प्रतिष्ठित चरित्रों को भी परिहास में लपेट लिया जाता है –

आ हो चाचा अटल बिहारी, कइसे तू होली मनावेलऽ
ए गो चाचा बार कुमार, तीन कुमारी रखावेल,
माया–ममता से भइल बाहर, आ हो उमा संग रास रचावेल

तीज – यह पर्व भी दोनों जगह समाज रूप से मनाया जाता है। स्त्रियाँ दिन भर के व्रत के बाद शाम में शिव–गौरी की पूजा कर अखण्ड सौभाग्य की कामना करती हैं। इसमें शिव की पूजा प्रमुख होती है –

का ले के शिव के मनाइब हो, शिव मानत नाहीं।
तोशक तकिया शिव के मनहुं न भावै, बाघ के छाला कहाँ पाइब हो, शिव मानत नाहीं। का ले के....

दोनों ही जगह लड़कियाँ मायके में हो तो ससुराल से और ससुराल में हो तो मायके से 'भाड़' (स्नेह–भेंट, पूजा सामग्री आदि) आने की प्रथा है।

जो त्योहार दोनों क्षेत्रों में भिन्न हैं उनमें प्रमुख है –

मधुश्रावणी – यह त्योहार या प्रथा भोजपुरी क्षेत्रों के लिए लगभग अनजानी प्रथा है। भोजपुरी और मैथिली भाषाएँ सगी बहनें हैं, ऐसा कहा जा सकता है। लेकिन फिर भी भोजपुरी क्षेत्र के कई लोग ऐसा विश्वास भी नहीं कर पाएंगे कि मिथिला में नवब्याहताओं के सौभाग्य की परीक्षा के लिए उन्हें जलती बत्तियों से दागा भी जाता है।

मधुश्रावणी के गीतों का विषय कुछ भी हो सकता है। एक गीत में यह बताया गया है कि पिता गरीबी के कारण अपनी बेटी को चुनरी नहीं खरदी पाता है तो उसका दामाद ही परदेस से चुनरी लाता है। इसमें पिता की कातरता और विवशता में वात्सल्य की झलक है –

निर्धन घर गे बेटी, तोहरो जनम भेल
निर्धन घर गे बेटी, तोहरो बियाह भेल
कतय पैब गे बेटी, लाल रंग केंचुआ
कतय पैब गे बेटी, हम चित्तसारी
से हो सुनि अमुक बर चलला बेसा हो।

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

मिथिला के सांस्तिक जीवन में इस पर्व का बड़ा महत्त्व है। यह पर्व तेरह दिनों तक चलता है, जिसमें नववधुओं को घर की बड़ी–बूढ़ी स्त्रियाँ कथा सुनाती हैं।

सामा–चकवा – जिस सामा–चकवा का श्री फरीश्वरनाथ 'रेणु' ने अपनी अमर .ति 'परती परिकथा' में विस्तार से वर्णन किया है वह आज भी मिथिला से बाहर के अधिकांश लोगों के लिए अनजानी चीज है। मोतिहारी को छोड़कर भोजपुरी क्षेत्र के लोग इससे अनभिज्ञ ही हैं।

पिड़िया – यह व्रत या त्योहार केवल पूर्वी उत्तरप्रदेश में ही लड़कियाँ करती हैं। मैथिली क्षेत्र इस प्रथा और व्रत से सर्वथा अनभिज्ञ है।

नागपंचमी – यह पर्व मैथिली क्षेत्रों में नाग की पूजा करके मनाया जाता है जबकि भोजपुरी क्षेत्र में 'गुड़िया बहाना' प्रचलित है। मैथिल लोग गुड़िया बहाने की प्रथा से सर्वथा अनभिज्ञ होते हैं।

श्यामा–चकेवा या सामा–चकवा छठ की समाप्ति के बाद कार्तिक महीने के शुक्लपक्ष में श्यामा–चकेवा के गीत गाये जाते हैं। श्यामा–चकेवा बालिकाओं का एक खेल है, जो बिहार के मिथिला क्षेत्र के कुछ खास गाँवों या नगरों में खेला जाता है।

श्यामा–चकेवा एक नाट्यगीत है। यह एक तरह का देहाती अभिनय है, जिसमें नाच भी किया जाता है। इसमें श्यामा और चकेवा खेल के प्रधान पात्र–पात्री हैं। श्याम बहन है, चकेवा भाई। इनके अलावा इस खेल में छः पूरकपात्र और हैं – 1) चुंगला, 2) सतभइया, 3) खँड़रिच, 4) वनतीतर, 5) झाँझी कुत्ता और 6) वृन्दावन।

चुंगला – यह इस खेल का दिलचस्प पात्र है। 'चुंगला' का अर्थ है – दूसरे की निन्दा करके अपना उल्लू सीधा करने वाला। श्यामा–चकेवा के खेल का उद्देश्य भाई–बहन के हृदय में विशुद्ध प्रेम का संचार दिखाना है।

सतभइया – श्यामा–चकेवा से किसी खास भाई–बहन का ही बोध होता है, इसलिये इस खेल में 'सतभइया' अर्थात सात भाई की मिट्टी की नामक एक नये पात्र की कल्पना की गई है ताकि इस खेल में भाग लेने वाली सभी बहनों के भाइयों का गुणगान किया जा सके। इस खेल में 'सतभइया' की जो मूर्ति बनाई जाती है, उसकी आ.ति मनुष्य की तरह होती है तथा संख्या सात होती है।

खँड़रिच – मिथिला के गाँवों में खंजन की जगह 'खँड़रिच' शब्द का प्रयोग होता है। खंजन शरद ऋतु का दूत होता है और इसी ऋतु में श्यामा–चकेवा के खेल खेले जाते हैं। इसके आगमन पर मंगलगीत गाये जाते हैं।

वनतीतर – श्यामा–चकेवा के गीत नदी किनारे, खेतों या वनों में गाये जाते हैं, इसलिये वनतीतर नामक एक वनवासी पात्र की कल्पना की गई है। यह झाड़ी–झुरमुटों में ही रहता है।

झाँझी कुत्ता – गाँव के गृहस्थों के घर में एक पालतू कुत्ता होता है, जो परिवार की शोभा और उसका रक्षक समझा जाता है। श्यामा–चकेवा खेलने वाली लड़कियाँ वन, बागों और खेतों में जाते हुए कुत्ते को भी साथ ले लेती है ताकि जंगल के खूनी जानवरों से आत्मरक्षा की जा सके।

वृन्दावन – इसका आशय वनविशेष से है, लेकिन इसकी आ.ति मनुष्य के मुख जैसी बनाई जाती है और इसके शरीर में पतली–पतली लम्बी सींके लगा दी जाती हैं। जब गीत गाती हुई लड़कियाँ वन, बागों और खेतों में जाती हैं तो इन सींकों में आग लगा देती है और गाती हैं

वृन्दावन में आग लागल कोई न बुजावय हे
हमरा से कोन भइया तिनहिं बुझावय हे।

उपर्युक्त छहों पात्रों को मूँज अथवा बाँस की चँगेरियों में रखकर श्यामा–चकेवा खेलने वाली लड़कियाँ उसमें दीपक जला लेती हैं और उन्हें सिर पर रखकर टोले–मुहल्लें तथा गाँव की परिक्रमा करती हैं। इसके बाद लड़कियाँ खेतों के किनारे तुलसी चौरे के निकट या किसी पेड़ की छाँह में बैठकर श्यामा–चकेवा के पात्रों को अपनी–अपनी चँगेरियों से निकाल कर जमीन पर रखती हैं और उन्हें हरी–हरी दूब की नन्हीं–नन्हीं फुनगियाँ चरने को देती हैं। इस प्रकार पात्रों को चराने के बाद लड़कियाँ अपने–अपने घर लौट जाती हैं ।

पिड़िया व्रत का समय आने पर भाई–बहन दोनों ही इस व्रत में भाग लेते हैं। भाई आधी रात में उठकर पूजा के लिये फल लाता है और बहन प्रातःकाल उठकर पिड़िया लगाती है। भाई–बहन के पारस्परिक प्रेम और सहयोग की व्यंजना इस गीत में हुई है। एक अन्य भोजपुरी गीत में भाई के आने के कारण बहन के उल्लास का चित्रण है –

कवन फुलवा फूलेला हरदिया अइसन ए गुलाब अइसन ना।

नागपंचमी– नागपंचमी का त्योहार प्रतिवर्ष श्रावण शुक्ल पंचमी को मनाया जाता है। इसे 'नागपचौया' भी कहते हैं। इस दिन सर्प की पूजा होती है। लड़कियाँ प्रातःकाल उठकर मकान की भित्ति पर गोबर से एक रेखा खींचती हैं तथा घर के प्रधान दरवाजे पर सर्प की दो मूतियाँ गोबर और चूने की बनाती हैं। इस दिन साँप की आ.तियों पर सिन्दूर भी डाला जाता है। इसके बाद नागदेवता की पूजा होती है। फिर एक कटोरे में दूध और धान का लावा भरकर एकान्त स्थान में रख दिया जाता है। लोगों का विश्वास है कि इस दिन नागदेवता आते हैं और दूध पीते हैं। नाग की पूजा करने वाले को इस दिन सर्प काटने

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

का भय नहीं होता। कहीं–कहीं दूध में कोयला घिसकर भी दीवार पर नाग बनाये जाते हैं और उनकी पूजा होती है। नागपंचमी के गीत इस प्रकार गाये जाते हैं –

मोरा नाग दुलरुआ हो मोरा नाग दुलरुआ, जे मोरा नाग के भिखिया न दीहैं
दूनो बेकति जरि जइहैं हो मोरे नाग दुलरुआ
जे मोरा नाग के भीखि उठि दीहें
दूनो बेकति सुखी रहिहैं हो मोरे नाग दुलरुआ।

कहीं–कहीं सभी दरवाजों पर गोबर की पिंडियाँ लगाकर उन पिंडियों पर सरसों, दूब, सिन्दूर लगाने की प्रथा है। इस दिन मैथिली औार भोजपुरी दोनों ही क्षेत्रों में दाल की भरवाँ पूड़ियाँ और खीर बनती है। अरबी के पत्तों की विशेष तरकारी बनती है, सभी 'लगुआ–बझुआ' को बाँटा जाता है।

मिथिला में बाजब्ता 'बिसहर थान' होते हैं।

बहनों की प्यारी गुड़ियों की उनके स्नेही भ्राता इतनी निर्दयता से पिटाई क्यों करते हैं यह तो ज्ञात नहीं। संभवतः गुड़ियों में अत्यधिक ध्यान होने के कारण गृहकार्य उपेक्षित हो गए हों और कभी कोई भाई भूखा रह गया हो और अपने क्रोध का प्रदर्शन इस तरह किया हो – कहा नहीं जा सकता।

इसके अलावा और भी छोटे–छोटे तीज–त्योहार हैं और उनके इक्का–दुक्का गीत भी हैं। जैसे बिहार तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश के कुछ भागों में यह प्रथा है कि बहनें भैयादूज के दिन सुबह मुँह अँधेरे उठकर, बासी मुँह से शाप देती हैं – मेरा भइया जहाँ हो, वहीं उस पर वज्र गिरे, उसे मौत उठा ले जाए। वगैरह–वगैरह। इस प्रथा का प्रारम्भ इस कथा से होना बताया जाता है।

एक राजा था। उसे एक लड़का और एक लड़की थी। दोनों बड़े प्यार से पले थे। राजकुमारी को एक बार एक जंगल लगी आग में एक साँप जलता दिखा। उसने उसकी जान बचाई। बदले में साँप ने उसे सभी पशु–पक्षियों की भाषा समझ में आने का वरदान दिया। राजकुमार का विवाह तय हुआ। विवाह वाले दिन मुँह अँधेरे राजकुमारी फूल तोड़ने निकली तभी उसे हरसिंगार की डाल पर बैठे तोते–तोती की आवाज सुनाई दी। 'यह नादान अपने भाई–भाभी की सुहागसेज सजाने के लिए फूल तोड़ने आई है। इसे क्या पता कि आज इसके भाई को यमराज ले जाने वाले हैं।' तोती ने पूछा – 'इसके भाई के विवाह के दिन ही यमराज उसे क्यों ले जाना चाहते हैं ?' उस पर तोते ने उत्तर दिया –'यमराज आज उसी आदमी को अपने साथ ले जाएँगे, जिसे किसी ने कभी शाप न दिया हो। और राजकुमार को किसी ने शाप नहीं दिया। फिर क्या था, तोतों की भाषा समझ चुकी राजकुमारी ने उसी समय से भाई को शाप देना शुरु किया। लोगों ने समझा, इसका दिमाग फिर गया है, इसलिए उसे एक कमरे में बंद कर दिया। पर उसने जिद की और बारात में साथ गई, भाँवरों–फेरों के समय भी भाई की पीछे–पीछे रही। भाई को जब कोहबर (शयनकक्ष) में ले गए तब भी वह साथ जाने की जिद करने लगी। लोगों ने समझाया कि आज तुम्हारे भाई–भाभी की सुहागरात है। तुम वहाँ जाकर क्या करोगी ? पर उसने एक न मानी और जाकर भाभी के पलंग के नीचे सो रही। तभी उसने तकिए के नीचे साँप का रूप धरे काल को घुसते देखा। उसने उसके सात टुकड़े कर एक जुड़े में, एक वेणी में, एक आँचल में, एक लहंगे के घेर में छुपा लिया। इसी हड़कम्प में भोर हो गई और राजकुमारी को लगा कि काल–दिवस बीत चुका है, अब उसके भाई का यमराज कुछ नहीं बिगाड़ सकते। तब उसने सारी कहानी लोगों को बताई और प्रमाणस्वरूप कालनाग के सातों टुकड़े जूड़े, वेणी, आँचल आदि से निकालकर लोगों को दिखाये। सबने यमराज से लोहा लेनेवाली उस बहन की काफी सराहना की।

इसी की याद में बहनें आज भी यह पर्व मनाती हैं। सुबह बासी मुँह रेगनी काँटा हाथ में ले भाइयों को शाप देती हैं। फिर एक दिन पहले से आँगन में गाय के गोबर से बनाकर रखे यम–यमी और यमालय को सजाती है। इस यमालय में जाता, ओखल, मूसरल, चूल्हा, सिलबट्टा आदि गृहोपयोगी सामान साथ यम के गण साँप–बिच्छु गोजर आदि भी बने रहते हैं। उत्तर सिर करके सोए रहते हैं यम–यमी। स्त्रियाँ और लड़कियाँ नहाधोकर, सज–धजकर, रोली, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवैद्य आदि षोडषोपचार से पूजा करती हैं यम–यमी की। उपर्युक्त कथा होती है। फिर एक ईंट को रोली आदि से सजाकर उसे समराज के सीने पर रख, सजे मूसल से उन्हें घूम–घूमकर, गा–गाकर कूटा जाता है –

कूटिलें औरा, कूटिलें भौंरा, कूटिलें जम के दुआर।
कूटिलें अपन भइया के दुसमन, चारों पहर दिन रात।

इसमें स्त्रियाँ 'अपन' की जगह अपने भाइयों के नाम लगाती हैं। यमराज की कपालक्रिया कर चुकने के बाद स्त्रियाँ रुई के हार को जोड़कर भाई की दीर्घायु की कामना करती हैं। उसकी आरती उतारसी हैं, तिलक लगाकर मिठाई खिलाती हैं। मिठाई से पहले यम के घर का अन्न 'बजरी' (सूखे मटर) को घोंटाती हैं और कहती है –'बजरी खाकर वज्र होओ' यानि तुम्हारा कोई कुछ न बिगाड़ सके। इसके बाद बहनें रेंगनी के काँटे को अपनी जीभ में चुभोकर मानो शाप का प्रायश्चित करती हैं –'जिस जीभ से भाई को शाप दिए, उसमें काँटे गड़े।' फिर बालों की लट हाथ में ले

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

मूसल को पार करते हुए कहती हैं –'मैं अपने भाई के काल का रक्त पी जाऊँगी। ऐ यमराज मेरी भाभी को सौभाग्य दो, भाई को आयु।'

कथा चाहे सुनने में, प्रथा चाहे दिखने में हास्यास्पद या कल्पनारंजित–कल्पित लगे, इस 'हाइटेक' जमाने में भी उस प्रान्त की स्त्रियाँ पूरी निष्ठा से भाई दूज इस तरीके से मनाती हैं।

एकादशी– यह एकादशी भादों मास में आती है और अधिकांशतया मैथिली और भोजपुरी दोनों ही क्षेत्रों की महिलाएँ अपने धर्म की प्राप्ति के लिए यह व्रत करती हैं। मान्यता है कि यह व्रत करने से जाने–अनजाने जो पाप कर्म हो गए होते हैं उनका नाश हो जाता है और सुख समृद्धि की प्राप्ति होती है। इस व्रत में गाए जाने वाले कुछ गीत निम्नलिखित हैं –

मेरा पिछुवरवा पटहेरिया भइया हो कि बिनी ना देहुँ,
लली पाटे खटोलवा हो।
लेहूँ ना बहिनी सुताई देहुँ ना दुलरा भगीनवा हो।
(2) काहे लागी भूखीला कर्म–धर्म, काहेल लागी।
, करम जुड़वाइला, काहे रे लागी। माई के दूध–पूत, बहिनिया ,हवाती,
कि अपना लागी , करम जुडवाइला। सासू के दूध –पूत, गोतिनिया अहिवाती,
कि अपना लागी , करम जुड़वाइला कि अपना लागी।

इस तरह हम पाते हैं कि इन जुड़वाँ प्रदेशों में लोक–संस्कृतियों में समानता होने के बावजूद तीज–त्योहार के न सिर्फ लोकगीतों बल्कि लोक–संस्कृतियों में भी भिन्नता है। यहा

एक बात का उल्लेख करना आवश्यक है। भोजपुरी क्षेत्रों में तीज त्योहारों या उल्लास के अन्य अवसरों पर स्त्रियाँ नाचती भी है और खूब नाचती हैं। परन्तु मैथिली क्षेत्रों में स्त्रियों का नाचना न के बराबर है। यहाँ नृत्य लोक–संस्कृति नहीं है। जबकि भोजपुरी क्षेत्रों में बहुए घूँघट काढ़कर उनकी उपस्थिति में भी नृत्य करती हैं जिनसे वे 'लजाती' यानी पर्दा करती है। पिड़िया के अवसर पर तो लड़किया रात–रात भर नाचती रहती हैं।

ऐसे ही मैथिली लोकगीत जो कोमलता लिए मन्थर गति से चलते हैं वहाँ ढोलक साथ नहीं देते। यही कारण है कि यहाँ लोकगीतों के साथ ढोलक बजाने की प्रथा कम है। जबकि भोजपुरी गीत अपेक्षा.त तीव्र गति वाले होते हैं और ढोलक बजाए जा सकते हैं, बजते हैं। ढोलक की थाप सुनते ही लड़कियाँ, बहुएँ यहाँ तक की प्रौढ़ाओं और वृद्धाओं तक के पाँव थिरक उठते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. परती परिकथा. फणीष्वर नाथ रेणु
2. इसके अलावा सारे संदर्भ लोक प्रचलित मौखिक लोक परंपरा से प्राप्त

*****